© INTERNATIONAL JOURNAL FOR RESEARCH PUBLICATION & SEMINAR
ISSN: 2276-6848 | Volume: 06 Issue: 01 | March-April 2015

आजाद हिन्द फौज के मुकदमें पर राष्ट्रीय प्रतिक्रिया

अमनजीत सिंहए एम.फिल.ए इतिहास विभागए कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र।

ISSN : 2278-6848 03
9 772278 684800
© International Journal for Research Publication and Seminar

आजाद हिन्द फौज का गठन सर्वप्रथम मोहन सिंह ने किया था वे ब्रिटेन की भारतीय सेना में अफसर थे। जब दक्षिण पूर्व एशिया के देशो में जापानियों ने ब्रिटेन को पराजित कर दिया तो अनेक सिपाहियों को जापानियों ने बंदी बना लिया और इन बन्दी सैनिकों को मोहन सिंह को साप दिया गया । इन सैनिकों को एकजुट करके मोहन सिंह ने आजाद हिन्द फौज का गठन किया लेकिन सैनिकों की संख्या को लेकर मोहन सिंह का जापानियों से मतभेद हो गया जिस कारण उनको जापान की तरफ से कोई सहायता नहीं मिल पाई।

आजाद हिन्द फौज का दूसरा चरण तब शुरू हुआ जब सुभाष बोस जर्मनी जापान से सिंगापुर लौटे जापानी सम्राट ने सुभाष बोस को सहायता का आश्वासन दिया और उन्होंने फिर सिंगापुर में 21 अक्तूबर 1943 को स्वाधीन भारत की सरकार गठित की और ब्रिटेन और संयुक्त राज्य अमरीका के खिलाफ युद्ध की घोषणा को। जर्मनी जापान तथा उनके समर्थक देशों ने इस सरकार को मान्यता दे दी। नवम्बर 1948 में जापानियों ने अंडेमान और निकोबार द्वीप समूह का प्रशासन आजाद हिन्द फौज को सौंपने के अपने निर्णय की घोषणा की इस प्रकार भारत की स्वतंत्रता के लिए आजाद हिन्द फौज ने साहसिक शुरूआत की। भारतीय लोगों व समुद्र पार रहने वाले भारतीयों ने धन और सामग्री देकर आजाद हिन्द फौज का खुलकर सहयोग किया और आजाद हिन्द फौज के नारे भी बड़े जोशीले थे। ''जयहिन्द'' और ''दिल्ली चलो'' सबसे अधीन प्रसिद्ध की वह घोषणा की जिसमें उन्हाने कहा ''तुम मुझे खुन दो, मैं तुम्हें आजादी दूंगा'' जापानियों के सहयोग से आजाद हिन्द फौज ने अपना विजय अभियान शुरू किया और 1944 में भारतीय सीमा पार कर तिरंगा झण्डा फहराया परन्तु अपनी प्रारम्भिक सफलता के बाद इसको पराजय का मुंह देखना पड़ा जिसके अनेक कारण थे जिसमें प्रमुख कारण यह था कि द्वितिय विश्वयुद्ध का रूख बदल रहा था। अनेक जगहों पर

Note :For Complete paper/article please contact us info@jrps.in

Please don't forget to mention reference number , volume number, issue number, name of the authors and title of the paper